# शोध सारांश

मध्यप्रदेश का मालवा क्षेत्र अपनी अनूठी लोककलाओं के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के लोकगीत, लोकसंगीत, लोकनृत्य, लोक वाद्ययंत्र, लोकनाट्य, एवं लोक पर्व अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। यह कलाएँ जितनी पारम्परिक हैं उतनी ही प्रासंगिक भी हैं। प्रस्तुत शोध मालवा के लोकनाट्यों की पृष्टभूमि में "माच" की भूमिका को रेखांकित करने एवं मालवा के अन्य कलारूपों की  परम्परा से निर्मित तथा समय के साथ परिष्कृत 'माच' से सम्बंधित है।

प्रस्तुत शोध में लोक नाट्य माच के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रख गया है, जिसके अंतर्गत माच की प्रस्तुती प्रक्रिया,वेशभूषा, मंच सज्जा, अभिनय, गीत, संवाद एवं नेपथ्य तथ पूर्वरंग जैसे सभी महत्वपूर्ण अंगों का अध्ययन एवं विश्लेष्ण किया गया है। माच की अपनी लम्बी परम्परा है, जिसके अन्दर अनेक कथानक शामिल हैं जिसमे ऐतिहासिक, पौराणिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा अनुष्ठानिक विषयों की लम्बी सूची है। अलग-अलग माचकारों ने मालवा अंचल के माच को नई उर्जा तथा दिशा दी है, जिसके कारण आज भी माच प्रासंगिक बना हुआ है। इन माचकारों जिन्हें माच का गुरु कहा जाता है, माच को समकालीन बनाने का प्रयास किया है जो आज भी निरंतर जारी है। यह लोक की अभिव्यक्ति है क्योंकि लोक हमारे जीवन दर्शन के लिए भी महत्वपूर्ण है। लोक शब्द अत्यंत प्राचीन है। यह शब्द संस्कृत के लोक दर्शने धातु से जन्मा है जिसका मतलब होता है नज़र डालना, देखना अथवा प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करना। इसी भावार्थ को हम माच की प्राण वायु कह सकते हैं। लोककलाओं में हमारे समाज का प्रतिबिम्ब झलकता है। माच के कथ्य से लेकर उसकी प्रस्तुति तक में हम मालवा अंचल के समाज, उसके परिवेश, उसकी सांस्कृतिक विरासत को देख सकते हैं।

माच के प्रस्तुति पक्ष की बात की जाये तो माच खुले रंगमंच की शैली है इसलिये माच के खेल प्रायः गर्मी के मौसम में मालवा के शहरों और गाँवों में आयोजित किये जाते हैं। माच की नाट्य प्रस्तुतियों को खेल कहते हैं। माच की आधुनिक कृतियों में सामाजिक और आर्थिक समस्याओं पर भी नये-नये खेल रचे गए हैं। भूदान आंदोलन पर आधारित धरती को दान और नवनिर्माण विषय उगता सूरज तथा परिवार नियोजन की पृष्टभूमि पर आधारित भगवान की देन जैसी माच कृतियां इस बात का प्रमाण हैं। मालवा का यह लोकनाट्य समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चलता रहा है। भारतीय लोकनाट्यों में माच अपना प्रमुख स्थान रखता है।  माच केवल मनोरंजन मात्र ही नहीं है। इसमें

लोकरंजन भी है। मनोरंजन तो केवल मन रंजन करता है और वह केवल मन को रास आता है। मनोरंजन तो बदलता रहता है, व्यक्ति की मानसिक स्थिति के अनुसार और इसीलिए वह अपनी-अपनी रूचि से बनता-बिगड़ता भी है। इसमें केवल आमोद, प्रमोद, विनोद और वैयक्तिक मनोरंजन के लिए आग्रह होता है। इस लिए यह व्यक्ति, जाति, वर्ग के अनुसार बदलता रहता है। दूसरों शब्दों में हम कह सकते हैं कि मनोरंजन के आचरण में पूर्वाग्रह भी आड़े आते हैं, जबकि लोकरंजन किसी व्यक्ति या वर्ग का न रहकर पूरे लोक का होता है। मालवा का माच लोकरंजन है। मालवा का लोकनाट्य माच जो की अपने कई रंगों के कारण समूचे देश में अपने पहचान को स्थापित किए हुये है। माच में गीत, नृत्य और अभिनय के माध्यम से कथा के प्रवाह को आगे बढ़ाने की प्रथा है।

मालवा प्रदेश सदैव ही अपनी उर्वर भूमि और सम्पन्नता के लिए जाना जाता है। सीमावर्ती प्रान्तों की तरहा संघर्षजन्य परिस्तिथियों में से उसे कम ही गुजरना पड़ा है। सम्पन्नता और शांति के परिणाम-स्वरूप अध्यात्मिकता और श्रंगारपरक भावनाओं का विकास-विस्तार होता रहा। शोध विषय के चयन के वक्त मेरी स्वयं की पृष्ठभूमि एवं माच से जुड़े मेरे कई अनुभव भी इस विषय पर के चयन का प्रमुख आधार है क्योंकि मै स्वयं मालवा क्षेत्र का हूँ और बचपन से मैंने माच देखा, उसकी धुनों को सुना है। अपनी आँखों के समक्ष माच के बदलते स्वरूप को मैंने अपने गाँव में देखा। एक विशेष बदलाव जो देखने को मिला वह यह है कि जहां पहले माच में पुरुष ही महिला पात्रों का अभिनय करते थे, जैसा कि भारत के अधिकतर लोकनाट्यों में होता था, वहीँ आज माच की समकालीन प्रस्तुतियों में हम महिला पात्रों का अभिनय करते हुए हम स्वयं स्त्रीयों को देख सकते है।

शोध में माच के इतिहास, इसकी परंपरा और मालवा आँचल की लोकसांस्कृतिक विशेषता को प्रकाश में लाने के दृष्टिकोण से विषय से सम्बंधित पुस्तकों, आलेखों, दस्तावेज इत्यादि का अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त माच के विविध पहलुओं को बारीकी से समझने एवं उसके प्रत्येक पक्ष को प्रकाश में लाने हेतु माच के कलाकारों, माच पर कार्य करने वाले अकादमिक विद्वानों के पक्ष को जाना ताकि माच के इतिहास से लेकर इसके प्रस्तुति पक्ष को बारीकी से प्रस्तुत किया जा सके।

यह शोध केवल मालवा अंचल के सांस्कृतिक विरासत के रूप में माच का एक परिचयात्मक कार्य भर नहीं है बल्कि शोध में माच के प्रत्येक पहलू को विस्तार से रेखांकित किया गया है। यह न केवल एक समृद्ध लोकसांस्कृतिक विरासत

का दस्तावेज़ है बल्कि भविष्य में माच पर होने वाले कार्यों के दृष्टिकोण से भी अकादमिक क्षेत्र के लिए एक लाभदायक है।